शोध सारांश

प्रस्तुत लघु शोध प्रबंध का विषय " 'एक था ठुनठुनिया' और 'गोट्या' में चित्रित बाल जीवन का स्वरूप" है। इसमें तुलनात्मक अध्ययन की प्रविधि को प्रस्तुत किया गया है। इन दोनों उपन्यासों में बाल जीवन के विविध पक्ष, बच्चों के मनोवैज्ञानिक पहलू ,बच्चों के प्रति बड़ों का व्यवहार, उनके आपसी सम्बन्ध, बच्चों की अपनी निजी दुनिया तथा उनके भाषा-संवाद का तुलनात्मक अध्ययन किया गया है।

बाल जीवन जितना सुहाना, सुंदर एवं हंसमुख होता है, कई बार उतना ही समस्याग्रस्त भी। बच्चे अपने अनुभव किसी से बता नहीं सकते। उनके छोटे से दिमाग पर बहुत ही जल्द अच्छे और बुरे का प्रभाव पड़ता है। बच्चे जिज्ञासु स्वभाव के होते हैं। उनके अंदर हरेक चीज को जानने की ललक होती है, जिसके कारण वे हमेशा अपने बड़ों से सवाल करते रहते हैं। हरेक वस्तु के बारे में जानना चाहते हैं, चाहे वह उनके काम की हो या ना हो। बाल मन बहुत ही कोमल और संवेदनशील होता है। उसका स्वभाव सोख्ते की तरह होता है, जिस पर जब कोई रंग लग जाता है तो वह स्थाई हो जाता है इसलिए इस संवेदनशील कोमल मन के स्वरूप को समझना आवश्यक है। बच्चों की भावनाओं को समझने के लिए उनके द्वारा की जा रही गतिविधियों को ध्यान में रखने की जरूरत होती है। बच्चों के मन में हमेशा चहल-पहल चलती रहती है। उन्हीं चहल-पहल और जिज्ञासु प्रवृत्ति के कारण बच्चे हमेशा कुछ-न-कुछ सीखते हुए आगे बढ़ते हैं। बच्चों के जीवन में सर्वाधिक प्रभाव माता-पिता का होता है। बच्चों की परवरिश वर्तमान परिवेश के साथ-साथ उनके भविष्य को ध्यान रखते हुए भी करनी पड़ती है क्योंकि बच्चे हमारे उज्ज्वल भविष्य की नींव हैं।

'एक था ठुनठुनिया' हिंदी बाल साहित्य का चर्चित उपन्यास है तो वहीं 'गोट्या' मराठी बाल साहित्य का। ठुनठुनिया अकेली माँ के साथ बिना पिता के प्यार-दुलार के बड़ा होता है तो गोट्या एक अनाथ बच्चा है, जिसे एक सज्जन पुरुष अपने साथ अपने घर ले जाते हैं और उसका पालन-पोषण

करते हैं। आज के समाज में बच्चे के नाम रखने में बड़ी तार्किकता देखी जाती है, किन्तु लेखक ने अपने बाल पात्रों के नाम बहुत ही अलग रखे हैं, जो नाम से ज्यादा काम के पहचान की सार्थकता को सिद्ध करते हैं। ठुनठुनिया और गोट्या दोनों का नाम सुनकर लोग सोचते हैं कि यह कैसा नाम है और उनका मजाक उड़ाते हैं, दोनों इस समस्या से गुजरते हैं। लेकिन दोनों इस समस्या से स्वयं ही निकलकर यह साबित कर देते हैं कि नाम कुछ भी हो काम अच्छा होना चाहिए। अच्छे से अच्छे नामों को समाज कैसे बिगाड़ देता है या स्वयं अपने हिसाब से कैसे बच्चे का नाम रख देता है इसका चित्रण भी उपन्यास में मिलता है। ठुनठुनिया और गोट्या दोनों का बचपन शरारत से भरा होता है। आम तौर पर बहुत से बच्चों में पढ़ाई से हटकर कंचे खेलने, पतंग उड़ाने, पेंच लगाने या कुछ ऐसा कर गुजरने की इच्छा बलवती होती है। ठुनठुनिया इसका अपवाद नहीं हैं। वह भी इन सभी कामों में अपनी महारथ सिद्ध करना चाहता है और ऐसा कर भी लेता है तो वहीं गोट्या हर दिन अपनी प्यारी शरारतों से पड़ोस की लड़ाकी मौसी का भी दिल जीत लेता है। गोट्या में सीखने की ललक बहुत है। वह जो भी चाहता है, वह सीख जाता है। ठुनठुनिया की तरह गोट्या भी तेज दिमाग का है, तभी तो वह दूसरी कक्षा से एकदम चौथी कक्षा में पहुँच जाता है। ठुनठुनिया और गोट्या दोनों विनोदप्रिय और निर्भीक स्वभाव के हैं। रचनाकार दोनों उपन्यासों में बच्चे की काल्पनिक दुनिया का सुंदर चित्रण करते हैं कि किस तरह बच्चा अपनी कल्पनाओं को असीमित क्षेत्र तक ले जाता है। बच्चे हर नई चीज़ को देखने और करने की ललक रखते हैं और वह किस तरह उनके कोरे मन पर जल्दी ही अपना छाप छोड़ देता है, इसकी भी सुंदर प्रस्तुति इन उपन्यासों में मिलती है। 'एक था ठुनठुनिया' और 'गोट्या' उपन्यास में बाल जीवन का चित्र ठुनठुनिया और गोट्या द्वारा सुंदर चित्रित किया गया है। बाल मन खेल, जंगल, पेड़-पौधे या कहें की आश्चर्यजनक चीजों में रमा रहता है। स्कूल में दोस्तों से आपसी संबंध, खेल, नोंक-झोंक का सहज चित्रण दिखाई देता है, जो बाल मन की उत्सुकता और उनके व्यवहार को दर्शाता है।

'गोट्या' उपन्यास में बाल मन की संवेदना के साथ-साथ बड़ों द्वारा बच्चों की गई उपेक्षा का भी चित्रण किया गया है। गोट्या इसी समाज में बड़ों द्वारा कितना उपेक्षित होता है। उपन्यास में हमें यह देखने को मिलता है कि बच्चा सच बोले तो सजा, झूठ बोले तो सजा, किसी का मनोरंजन करे तब भी सजा, जबकि बड़ों को बच्चों के साथ ऐसा व्यवहार नहीं करना चाहिए। इसका चित्रण उपन्यास में मिलता है कि किस तरह समाज में बच्चों को उनके पढ़ने-लिखने की उम्र में बाल मजदूरी की गर्त में ढ़केल दिया गया है। बच्चे बचपन से ही झूठे नहीं होते। इस समाज और अपने बड़ों से ही उन्हें यह सब सीखने को मिलता है। बच्चों की संवेदनाओं उनकी भावनाओं को बड़ों को समझना चाहिए। इन सबका उदाहरण हमें दोनों उपन्यासों में मिलता है। लेखक उपन्यास के माध्यम से यह दिखाना चाहते हैं कि समाज में अच्छे-बुरे दोनों तरह के लोग मौजूद हैं।

दोनों उपन्यासकार बच्चों के मन का कोना-कोना झाँक आए हैं। दोनों उपन्यासों में बच्चों की चंचलता, उनकी जिज्ञासा, उनकी रुचियाँ, उनकी संवेदना का चित्रण काफी जीवंतता के साथ मिलता है। बच्चे का मन शरारतों, कंचे, रंग-बिरंगे पतंग, खेल, त्योहारों इत्यादि में ज्यादा लगता है। बच्चों के पारिवारिक, सामाजिक परिवेश में अगर उन्हें दूसरों से प्रेमपूर्वक रहने तथा मदद करने जैसी अच्छी शिक्षा दी जाए तो बच्चे उसको जल्दी ग्रहण कर लेते हैं। इसका चित्रण ताम्हनकर जी ने सुंदर तरीके से किया है। इन उपन्यासों के अध्ययन से यह ज्ञात होता है कि बच्चों की संवेदना, उनकी जिज्ञासा तो मान्य है, किन्तु आस-पास के परिवेश का भी उन पर असर पड़ता है, सबसे ज्यादा परिवार का। परिवार में ही बच्चे आपस में मिल-जुल कर रहना, एक-दूसरे का सम्मान करना, एक दूसरे की भावनाओं को समझना इत्यादि बातें सीखते हैं। बड़ों द्वारा बच्चों के साथ जैसा व्यवहार होगा वे वैसा ही व्यवहार सीखते और करते हैं। इसका चित्रण हमें दोनों उपन्यासों में देखने को मिलता है। दोनों उपन्यासों में बाल जीवन की सुंदर और जीवंत तस्वीर पेश की है। इस लिहाज से ये दोनों बाल साहित्य की श्रेष्ठ कृतियाँ हैं।